विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF
SCIENCE & TECHNOLOGY

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के
तत्वावधान में
(डीएसटी के स्वायत्त संस्थानों के लिए)

इंटरनेशनल एडवांस्ड रिसर्च सेंटर फॉर पाउडर मेटलर्जी एंड न्यू मटेरियल्स (एआरसीआई)

द्वारा आयोजित दो दिवसीय

प्रथम अखिल भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी राजभाषा संगोष्ठी - 2024

दिनांक: 21-22 मार्च, 2024

विषय: आत्मनिर्भर भारत में डीएसटी के स्वायत्त संस्थानों की भूमिका

Role of DST Autonomous Institutes in Self-Reliant India

ए आर सी आई
ARCI

आयोजन स्थल:

इंटरनेशनल एडवांस्ड रिसर्च सेंटर फॉर पाउडर मेटलर्जी एंड न्यू मटेरियल्स (एआरसीआई)

(विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार का स्वायत्त अनुसंधान एवं विकास केंद्र)

बालापुर डाक घर, हैदराबाद - 500 005, भारत

फोन: 040-24452356/24452456 | ईमेल: olic.hindi@arci.res.in | वेबसाइट: https://www.arci.res.in

संगोष्ठी का उद्देश्य:

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आधुनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसने मानव सभ्यता को गहराई से प्रभावित किया है। आधुनिक संस्कृति और सभ्यता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर निर्भर हो गई है क्योंकि ये लोगों की जरुरतों और अपेक्षाओं के अनुसार जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ही एक ऐसा क्षेत्र है जो जनहित में संजीवनी का कार्य कर सकती है। अतः प्रयोजन के दृष्टिकोण में,राष्ट्रीय स्तर पर, अनन्य क्षेत्रों में प्रौद्योगिकियों का विकास एवं अंतरण करने में हमारे वैज्ञानिकगण निष्ठापूर्वक कार्यरत हैं। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में, हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अपने दायरे को विस्तारित करने की आवश्यकता है। इसके लिए स्वदेशी संसाधनों का ही उपयोग करते हुए स्वदेशी प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान-केंद्रित करना होगा। इसी परिकल्पना के साथ, डीएसटी के अंतर्गत आनेवाले सभी संस्थानों एवं केंद्रों में संचालित अनुसंधान एवं विकास कार्यों को एक मंच पर लाना और भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग करना, इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य है। अनुसंधान, विकास और प्रौद्योगिकी अंतरणों के दौरान आनेवाली समस्याओं एवं चुनौतियों पर इस संगोष्ठी में विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी। अनुसंधान एवं विकास के कार्यों की महत्ता को आम-भाषा, हमारी भाषा एवं राजभाषा हिंदी द्वारा प्रचार-प्रसार कर सामान्य नागरिक तक पहुँचाना भी इस संगोष्ठी का एक मुख्य उद्देश्य है।

मुख्य संरक्षक

- प्रोफेसर अभय करंदीकर, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
- श्री विश्वजीत सहाय, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
- श्री सुनील कुमार, अपर सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
- डॉ. टाटा नरसिंग राव, निदेशक, एआरसीआई, हैदराबाद
- श्रीमती ए. धनलक्ष्मी, संयुक्त सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
- डॉ. एम. मोहंती, प्रमुख, स्वायत्त संस्थान प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग

सह-संरक्षक

- श्री प्रदीप कुमार सिंह, निदेशक, स्वायत्त संस्थान प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग
- डॉ. रॉय जॉनसन, सह-निदेशक
- श्री डी. श्रीनिवास राव, सह-निदेशक
- डॉ. पवन कुमार जैन, सह-निदेशक

संगोष्ठी आयोजन समिति

- **डॉ. संजय आर. ढगे, अध्यक्ष**
- **श्री ए. श्रीनिवास, उपाध्यक्ष**
- डॉ. कल्याण हेम्ब्रम, सदस्य
- श्री एन. श्रीनिवास, सदस्य
- श्री जी. एम. राजकुमार, सदस्य
- श्रीमती बी. वी. शालिनी, सदस्य
- श्री एन. वेंकट राव, सदस्य
- श्री एस. शंकर गणेश, सदस्य
- श्री टीटीटी कोटेश्वर राव, सदस्य
- श्री एन. संपत कुमार, सदस्य
- **डॉ. रंभा सिंह, संयोजक**

एआरसीआई: एक परिचय

एआरसीआई एक अनुसंधान एवं विकास संस्थान है। इसकी स्थापना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (डीएसटी) विभाग के अंतर्गत स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई है। इस संस्थान का मुख्य कार्य पदार्थ अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करना है और यह संस्थान निम्नलिखित अधिदेश के साथ कार्यरत है:

- आला बाजारों के लिए उच्च निष्पादन पदार्थों और प्रक्रमों का विकास
- प्रोटोटाइप और प्रायोगिक स्तर पर प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन
- अधिक प्रतिस्पर्धी और सक्षम होने के लिए, वाणिज्यिक अनुप्रयोगों के लिए भारतीय उद्योगों को एआरसीआई द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का अंतरण
- उन्नत पदार्थों और प्रक्रमों के क्षेत्र में वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान करना
- विज्ञान आउटरीच कार्यक्रमों को बढ़ावा देना

एआरसीआई विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने विशिष्ट 11 अनुसंधान केंद्रों द्वारा किए जाने वाले विशेषज्ञतापूर्ण अनुसंधानों का प्रौद्योगिकी के रूप में अंतरण कर उसे न केवल कार्यनीतिक क्षेत्रों, बल्कि उपयोगकर्ता उद्योगों को भी अंतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस संस्थान के नाम में निहितानुसार, एआरसीआई अपने लक्ष्यों की समग्र उपलब्धि प्राप्त करने के लिए, भारतीय एवं विदेशी प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों और उद्योगों के साथ सहयोग करने के लिए भी प्रयास करता है।

आज के इस सूचना और प्रौद्योगिकी युग में अभिनव अनुसंधानों से उत्सर्जित ज्ञान का सफल प्रबंधन अपरिहार्य है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के सभी स्वायत्त सस्थानों के लिए, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तत्वावधान में, एआरसीआई द्वारा "आत्मनिर्भर भारत में डीएसटी के स्वायत्त संस्थानों की भूमिका" विषय पर दो दिवसीय 'प्रथम अखिल भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी राजभाषा संगोष्ठी-2024' का आयोजन 21-22 मार्च, 2024 को किया जा रहा है। संगोष्ठी में शोध-पत्र एवं आलेख प्रस्तुत करने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं। इस संगोष्ठी के दौरान डीएसटी के सभी स्वायत्त संस्थानों द्वारा लगभग 45-50 शोध-पत्र एवं आलेख प्रस्तुत किए जाएंगे।

शोध पत्र या आलेख से संबंधित दिशानिर्देश:

- शोध–पत्र एवं आलेख मंगल फॉंट (यूनिकोड) में और 300–500 शब्दों में होना चाहिए।
- शोध–पत्र एवं आलेख एम.एस. वर्ड और ए4 साइज़ पृष्ठ में टंकित होना चाहिए।
- टंकण करते समय चारों ओर 1" मार्जिन रखें।
- मुख्य शीर्षक 15 फॉंट में, उप-शीर्षक 13 फॉंट में और आलेख 11 फॉंट में होना चाहिए।
- मौखिक प्रस्तुतीकरण का अधिकतम समय 10 मिनट रहेगा।
- **शोध–पत्र एवं आलेख भेजने की अंतिम तिथि -28 फरवरी, 2024 है।**

हैदराबाद के प्रमुख आकर्षण:

चार-मीनार: यह इमारत चार सौ वर्ष प्राचीन है । इसका निर्माण साल 1592 में मुगल सम्राट मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने करवाया था । चारमीनार 20 मीटर लंबी है और इसकी चौड़ाई भी 20 मीटर ही है तथा इसकी ऊंचाई 48.7 मीटर है। इसके नीचे से ऊपर जाने के लिए, आपको इसमें 149 घुमावदार सीढ़ियां चढ़ कर जाना होगा। यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए चारमीनार का बाजार भी आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी: इसकी प्रतिमा 216 फुट ऊंची है। यह 11वीं सदी के संत श्री रामानुजाचार्य की याद में बनाई गई है। यह प्रतिमा पंचधातु से बनी है। इसमें सोना, चांदी, तांबा, पीतल और जिंक शामिल हैं। यह दुनिया में बैठी अवस्था में सबसे ऊंची धातु की प्रतिमाओं में से एक है। यह 54 फुट ऊंचे आधार भवन पर स्थापित है।

गोलकोंडा किला: इस दुर्ग का निर्माण वरंगल के राजा ने 14वीं शताब्दी में कराया था। यह ग्रैनाइट की एक पहाड़ी पर बना है जिसमें कुल आठ दरवाजे हैं और यह पत्थर की तीन मील लंबी मजबूत दीवार से घिरा है। यहाँ के महलों तथा मस्जिदों के खंडहर अपने प्राचीन गौरव गरिमा की कहानी सुनाते हैं। मूसी नदी दुर्ग के दक्षिण में बहती है। दुर्ग से लगभग आधा मील उत्तर कुतबशाही राजाओं के ग्रैनाइट पत्थर के मकबरे हैं जो टूटी फूटी अवस्था में अब भी विद्यमान हैं।

रामोजी फिल्म सिटी: इसे दुनिया का सबसे बडा फिल्म स्टूडियो परिसर माना जाता है। यह हैदराबाद से 25 किलो मीटर दूर नल्गोंडा मार्ग में अब्दुल्लापुरमेट में स्थित है। यह स्टूडियो 2000 एकड़ (8.2 वर्ग किलोमीटर) से भी अधिक क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इस स्टूडियो में 50 शूटिंग फ्लोर है। इसे गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा प्रमाणित किया गया है। इसे सन् 1996 में तेलुगु मीडिया टाइकून रामोजी राव द्वारा स्थापित किया गया था।

आयोजन तिथि एवं स्थल

दिनांक: 21-22 मार्च, 2024

जी. एस. भट्टाचार्जी सेमिनार हॉल - एआरसीआई

पत्राचार एवं संपर्क

श्री ए. श्रीनिवास, उपाध्यक्ष

एआरसीआई, बालापुर, हैदराबाद - 500 005
दूरभाष: 040-24452356, 9491903148, 6303575491

डॉ. रंभा सिंह, संयोजक

दूरभाष: 040-24452456
मोबाइल: 8179378990, 8309923516
ई-मेल: olic.hindi@arci.res.in